रसदोष (काव्यप्रकाश)

प्रस्तोता – अरुण पाण्डेय

रसदोष

काव्यप्रकाश में रसदोष का निरूपण सप्तम उल्लास में है।

१३ प्रकार के रसदोष कहे गये हैं। जैसे -

व्यभिचारिरसस्थायिभावानां शब्दवाच्यता।
कष्टकल्पनया व्यक्तिरनुभावविभावयोः॥
प्रतिकूलविभावादिग्रहो दीप्तिः पुनः पुनः।
अकाण्डे प्रथनच्छेदौ अङ्गस्याप्यतिविस्तृतिः॥
अङ्गिनोऽननुसंधानं प्रकृतीनां विपर्ययः।
अनङ्गस्याभिधानं च रसे दोषाः स्युरीदृशाः॥

- रस के अपकर्षक रसदोष १३ होते हैं –

१- व्यभिचारिभावानां शब्दवाच्यता, २- रसानां शब्दवाच्यता, ३– स्थायिभावानां शब्दवाच्यता, ४ -अनुभावस्य कष्टकल्पनया व्यक्तिः, ५- विभावस्य कष्टकल्पनया व्यक्तिः , ६ – विरुद्धविभावादिग्रहणम् ,७ – अङ्गभूतरसस्य पुनः पुनः दीप्तिः , ८ – अकाण्डे प्रथनम् , ९ – अकाण्डे छेदः, १०- अङ्गस्य अतिविस्तृतिः ,११ अङ्गिनः अपरामर्शः , १२ – प्रकृतीनां विपर्ययः, १३ – अनङ्गस्य अभिधानम् । अब इनका सोदाहरण क्रमशः वर्णन करते हैं -

१- व्यभिचारिभावानां शब्दवाच्यता,

- ३३ व्यभिचारी भावों में से किसी का भी यदि शब्द से ग्रहण किया जाये तो वह रसदोष माना जाता है।

सव्रीडा दयितानने सकरुणा मातङ्गचर्माम्बरे

सत्रासा भुजगे सविस्मयरसा चन्द्रेऽमृतस्यन्दिनि।

सेर्ष्या जह्नुसुतावलोकनविधौ दीना कपालोदरे

पार्वत्या नवसंगमप्रणयिनी दृष्टिः शिवायास्तु वः ॥

- उपरोक्त उदाहरण में **व्रीडा, करुणा, त्रास , ईर्ष्या** आदि व्यभिचारी भावों का शब्दशः ग्रहण रूपी रसदोष है। उसका निवारण – "**व्यानम्रा दयितानने मुकुलिता मातङ्गचर्माम्बरे**" इत्यादि परिवर्त्तन के द्वारा सम्भव है।

२- रसानां शब्दवाच्यता

- ✓ जहां पर रस का शब्द से ग्रहण किया जाता है वहां भी रसदोष होता है। जैसे –

तामनङ्गजयमङ्गलश्रियं किंचिदुच्चभुजमूललोकिताम्।
नेत्रयोः कृतवतोऽस्य गोचरे कोऽप्यजायत **रसो** निरन्तरः॥

आलोक्य कोमलकपोलतलाभिषिक्त-
व्यक्तानुरागसुभगामभिराममूर्तिम्।
पश्यैष बाल्यमतिवृत्य विवर्तमानः
शृङ्गारसीमनि तरङ्गितमातनोति॥

उपरोक्त दोनों उदाहरणों में रस और शृङ्गार का शब्द से ग्रहण है।

३– स्थायिभावानां शब्दवाच्यता

- ✓ जहां पर स्थायिभाव का शब्द से ग्रहण किया जाता है वहां भी रसदोष होता है। जैसे –

सम्प्रहारे प्रहरणैः प्रहाराणाम्परस्परम्।
ठणत्कारैः श्रुतिगतै**रुत्साह**स्तस्त कोऽप्यभूत्॥

- ✓ उपरोक्त उदाहरण में वीररस के स्थायिभाव **उत्साह** का शब्द से ग्रहण किया गया है अतः रस दोष है।

४ -अनुभावस्य कष्टकल्पनया व्यक्तिः

कर्पूरधूलिधवलद्युतिपूरधौत
दिङ्मण्डले शिशिररोचिषि तस्य यूनः।
लीलाशिरोंऽशुकनिवेशविशेषक्लृप्ति-
व्यक्तस्तनोन्नतिरभून्नवयौवना सा ॥

- इस उदाहरण में संयोगशृङ्गार में उचित चन्द्रचन्द्रिका रूपी उद्दीपन विभाव भी है तथा नवयुवती रूपी आलम्बन विभाव भी है तथापि नायक में होने वाले स्तम्भ स्वेद आदि अनुभाव अनायास ही अभिव्यंजक नहीं हो पाते। अतः अनुभाव की कष्टकल्पना से अभिव्यक्ति होना रस दोष है।

५ -विभावस्य कष्टकल्पनया व्यक्तिः

परिहरति रतिं मतिं लुनीते स्खलति भृशं परिवर्तते च भूयः।
इति बत विषमा दशास्य देहं परिभवति प्रसभं किमत्र कुर्मः ।।

- इस उदाहरण में युवा प्रेमी की किसी भी विषय में रति नही रह जाना , न ही वह किसी भी वस्तु को पहचान पाना इत्यादि अनुभाव करुण , भयानक तथा बीभत्स रस में भी सम्भव हैं । अतः यहां नायक में रहने वाला विप्रलम्भशृङ्गार का कान्ता आदि रूप आलम्बन विभाव में अविलम्ब प्रतीति नहीं हो पा रही है ।

६ – विरुद्धविभावादिग्रहणम्

प्रसादे वर्तस्व प्रकटय मुदं संत्यज रुषं

प्रिये शुष्यन्त्यङ्गान्यमृतमिव ते सिञ्चति वचः।

निधानं सौख्यानां क्षणमभिमुखं स्थापय मुखं

न मुग्धे प्रत्येतुं प्रभवति गतः कालहरिणः ॥

- यहां शृङ्गाररस के विरुद्ध शान्तरस के उद्दीपन विभाव का अर्थात् समय की क्षणभंगुरता का वर्णन है , जो कि शृङ्गार रस का विघातक है। साथ ही साथ इस उद्दीपन विभाव से प्रकाशित निर्वेद रूपी व्यभिचारी भाव भी शृङ्गार रस का विरुद्ध ही है।

७ – अङ्गभूतरसस्य पुनः पुनः दीप्तिः

- ✓ गौणभूत रस की पुनः पुनः दीप्ति होना भी रसदोष है जैसे –

  दीप्तिः पुनः पुनर्यथा कुमारसम्भवे रतिविलापे।

- ✓ कुमारसम्भव में कामदेव के दहन उपरान्त रतिविलाप के अवसर पर कालिदास जी ने गौणभूत "**करुण**" रस का पुनः पुनः उद्दीपन कराया है। वह भी रस दोष की श्रेणी में आता है।

८ – अकाण्डे प्रथनम्

बिना अवसर के रस का विस्तार करना भी रसदोष कहा जाता है।
जैसे –

अकाण्डे प्रथनं यथा – वेणीसंहारे द्वितीयेऽङ्के अनेकवीरक्षये प्रवृत्ते भानुमत्या सह दुर्योधनस्य शृङ्गारवर्णनम्।

वेणीसंहार नाटक के द्वितीय अंक में अनेकवीर मारे जा रहे हैं ऐसी अवस्था में भी भानुमती का दुर्योधन के साथ शृङ्गार रस का वर्णन है। वह अकाण्डे प्रथनम् रूपी रस दोष है।

१ – अकाण्डे छेदः

- बिना अवसर के रस का विच्छेद करना भी रसदोष कहा जाता है। जैसे –

अकाण्डे छेदो यथा वीरचरिते द्वितीयेऽङ्के राघवभार्गवयोर्धाराधिरूढे वीररसे "कङ्कणमोचनाय गच्छामि" इति राघवस्योक्तौ॥

- महावीरचरित के द्वितीय अंक में जहां राम और परशुराम युद्धोत्साह के वर्णन अवसर पर राम का “कङ्कणमोचनाय गच्छामि”(विवाह के दशम दिन के उत्सव के लिये जा रहा हूँ) यह कथन राम के वीर रस का विच्छेद करने वाला है। अतः रस दोष है।

१०- अङ्गस्य अतिविस्तृतिः

- ✓ जहां पर प्रधान(अङ्गी) को छोडकर अप्रधान (अङ्ग) का अति विस्तार से वर्णन किया जाए वहां भी रसदोष होता है।

अङ्गस्याप्रधानस्यातिविस्तरेण वर्णनम्। यथा हयग्रीववधे हयग्रीवस्य॥

- ✓ हयग्रीववध महाकाव्य में प्रधान नायक विष्णु के बदले हयग्रीव का अत्यधिक विस्तृत वर्णन है , यह रसदोष है।

११ अङ्गिनः अपरामर्शः

- अङ्गी अर्थात् प्रधानभूत नायक नायिका आदि को अन्य विषयों के वर्णन में भूल जाना भी रसदोष कहलाता है जैसे -

अङ्गिनोऽननुसंधानम्। यथा रत्नावल्यां चतुर्थेऽङ्के बाभ्रव्यागमने सागरिकाया विस्मृतिः॥

- रत्नावली नाटिका के चतुर्थ अंक में बाभ्रव्य (सिंहलनरेश के कञ्चुकी) के आगमन पर सागरिका (मुख्य नायिका रत्नावली) का नायक उदयन द्वारा एक प्रकार से विस्मरण हो जाना। जिससे नाटिका के मुख्य प्रतिपाद्य रस शृङ्गार का भंग हो जाता है।

१२ – प्रकृतीनां विपर्ययः

- प्रकृतयो दिव्या अदिव्या दिव्यादिव्याश्च वीररौद्रशृङ्गारशान्तरसप्रधाना धीरोदात्तधीरोद्धतधीरललितधीरप्रशान्ताः, उत्तमाधममध्यमाश्च। तत्र रतिहासशोकाद्भुतानि, अदिव्योत्तमप्रकृतिवत् दिव्येष्वपि। किं तु रतिः संभोगशृङ्गाररूपा, उत्तमदेवताविषया न वर्णनीया। तद् वर्णनं हि पित्रोः संभोगवर्णनमिवात्यन्तमनुचितम्।

क्रोधं प्रभो संहर संहरेति यावद्गिरः खे मरुतां चरन्ति।
तावत्स वह्निर्भवनेत्रजन्मा भस्मावशेषं मदनं चकार॥

इत्युक्तवत् भ्रुकुट्यादिविकारवर्जितः क्रोधः सद्यःफलदः स्वर्गपातालगगनसमुद्रोल्लङ्घनाद्युत्साहश्च दिव्येष्वेव । अदिव्येषु तु यावदवदानं प्रसिद्धमुचितं वा तावदेवोपनिबद्धव्यम् । अधिकं निबध्यमानमसत्यप्रतिभासेन "नायकवद्वर्तितव्यं न प्रतिनायकवत्" इत्युपदेशे न पर्यवस्येत् । दिव्यादिव्येषु, उभयथापि। एवमुक्तस्यौचित्यस्य दिव्यादीनामिव धीरोदात्तादीनामप्यन्यथावर्णनं विपर्ययः। तत्रभवन् भगवन्नित्युत्तमेन न अधमेन मुनिप्रभृतौ न राजादौ भट्टारकेति नोत्तमेति नोत्तमेन राजादौ प्रकृतिविपर्ययापत्तेर्वाच्यम् । एवं देशकालवयोजात्यादीनां वेषव्यवहारादिकमुचित-मेवोपनिबद्धव्यम्॥

१३ – अनङ्गस्य अभिधानम्

- ✓ अनङ्ग अर्थात् जो रस के लिये उपयोगी न हो उसका वर्णन करना भी रसदोष कहा जाता है। जैसे –

अनङ्गस्य रसानुपकारकस्य वर्णनम्। यथा कर्पूरमञ्जर्यां नायिकया स्वात्मना च कृतं वसन्तवर्णनमनादृत्य बन्दिवर्णितस्य राज्ञा प्रशंसनम्॥

- ✓ कर्पूरमञ्जरी में नायिका (विभ्रमलेखा) के द्वारा तथा नायक राजा (चण्डपाल) द्वारा वसन्तवर्णन की उपेक्षा करके चारण (बन्दी जनों) के द्वारा वर्णित वसन्तवर्णन की राजा के द्वारा प्रसंशा करना रसदोष है।

धन्यवाद: